IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

कबीर दास के आर्थिक विचारों की वर्तमान समय में प्रासंगिकता

विजय कुमार
सह आचार्य ,
आर्थिक प्रशासन एंव वित्तीय प्रबंध विभाग
सनातन धर्म राजकीय महाविद्यालय, ब्यावर

भक्ति काल 14वीं से 17वीं शताब्दी के बीच के इतिहास को भक्ति काल के रूप में पहचाना जाता है । भक्ति काल का साहित्य केवल आध्यात्म तक सीमित नहीं था बल्कि इसमें अर्थ संबंधी विचार जैसे श्रम ,संपत्ति, सामान्य जीवन निर्वाह आदि विचार भी समाहित है। भक्ति काल के संतों ने अंततः शोषण , लोभ और जातिगत असमानता पर अपने विचार कविता , दोहों और श्लोकों के माध्यम से रखें ।
भक्ति काल के संतों में प्रमुख रूप से कबीर सूरदास,दादू दयाल, रज्जब,तुलसीदास इत्यादि शामिल है जिन्होंने सीमित उपभोग श्रम, लाभ, आर्थिक समानता, संसाधनों का न्याय पूर्ण वितरण तथा सामाजिक कल्याण जैसे विषयों पर अपने विचारों को प्रकट किया ।

कबीर दास जी का जीवन परिचयः–

कबीर दास जी हिंदी साहित्य के भक्ति काल के प्रमुख संत रहे आप समाज सुधारक भी माने जाते हैं कबीर दास जी के विचार धर्म ,समाज ,जाति, मानवीय मूल्यों के साथ–साथ आर्थिक,पहलुओं पर भी कठोर वार करते है। कबीर दास जी का जन्म लगभग 1398 ईस्वी में माना जाता है। आपके जन्म स्थान को व्यापक रूप से काशी माना जाता है तथा निर्वाण 1598 ई में मगहर नामक स्थान पर हुआ ।

आपका पालन पोषण एक साधारण जुलाहे परिवार में हुआ, इसीलिए आपकी वाणी में आत्मनिर्भरता श्रम और सामाजिक समानता झलकती है।

अध्ययन के उद्देश्य

अध्ययन के प्रमुख उद्देश्यों मे कबीर दास जी के आर्थिक विचारों का वर्तमान समय में प्रासंगिकता ज्ञात करना है तथा द्वितीय उद्देश्य निम्न प्रकार है :–

1. कबीर दास जी के दोहों में निहित आर्थिक सिद्धांतों का विश्लेषण करना ।
2. कबीर दास जी के विचारों का आधुनिक अवधारणा के साथ तुलना करना ।
3. सतत विकास में कबीर दास की आर्थिक विचारों का प्रासंगिकता ज्ञात करना ।

कबीर दास जी के आर्थिक विचारः–

कबीर दास जी के आर्थिक विचारों को हम उनकी कबीर ग्रंथावली जैसे अनेक काव्यों में पढ़ते है, इस शोध पत्र में कबीर दास जी के आर्थिक विचारों को हम ''माया कौ अंग' शीर्शक के अंतर्गत पढ़ेंगे । कबीर दास जी के विचार धन के बारे में अधिक उग्र रहे हैं,उनके अनुसार धन मनुष्य को आध्यात्मिक भाव से दूर ले जाता है।

''कबीर माया पापणी,लाले लाया लोग।

पूरी किन्हु न भोगई,इनका इहे बिजो।।''

कबीर दास जी कहते हैं की माया अर्थात धन ,लाभ, मनुष्यों को लोभ का मार्ग प्रदान करती है और इसकी पूर्ति कभी नहीं होती अर्थात मुद्रा की सीमांत उपयोगिता हमेशा धनात्मक बनी रहती है इसके लिए मनुष्य लालायत रहता है। धन सीमांत उपयोगिता ह्रास नियम के अपवाद के रूप में कबीर दास जी प्रतिपादित करते है।

''कबीर माया माहिनी, मोहे जांण सूजाण ।

भागॉ ही छूट नही, भरी भरी मार बाण ।।

उपयुक्त दोहे के माध्यम से कबीर दास जी बताते हैं किस प्रकार से मनुष्य को धन्य अपने वश में कर रखा है। धन के आगे व्यक्ति को कुछ नजर नहीं आता है , कबीर दास जी कहते हैं की व्यक्ति धन के उपभाग में इस प्रकार फंस चुका है कि वह अपने आप को दूसरे मनुष्य के ऊपर अपने सर्वाधिक उपभोग को स्पष्ट करता है,इसकी व्याख्या वर्तमान समय में किन्स के आय के गत चोटी सिद्धांत द्वारा समझा जा सकता है की किस प्रकार एक व्यक्ति उपभोग हेतु अपने पड़ोसियों से आगे निकलने की कल्पना करता है।

कबीर दास जी के एक अन्य के दोहे के माध्यम से हम ''माया बुरी स्वामिनी परन्तु अच्छी सेवक है'' जैसे विचारधारा को भी स्पष्ट कर सकते है । कबीर दास जी कहते हैं की

''माया दासी संत की, ऊभी देइ असीस ।

बिलसी अरु लातौं छड़ी, सुमरि–सुमरि जगदीस ।।

व

सांकल हूॅ ते सबल है, माया इहि संसार ।

ते क्यूॅ छूटैं बापूडे, बॉधे सिरजन हार।।

माया अर्थात धनसंतों की दासी होती है । यह धन संतों की सेवा करने के लिए तत्पर रहती है,जिस प्रकार एक संत इस माया अर्थात धन को अपने ऊपर हावी नहीं होने देता है ,इस प्रकार अन्य मनुष्य भी माया का उपभोग कर सकते है, क्योंकि वर्तमान समय में हम ''माया बुरी स्वामिनी है परंतु अच्छी सेवक है''' जैसे विचारधारा को स्पष्ट कर सकते हैं । माया एक उपभोक्ता के लिए बहुत हानिकारक सिद्ध हो सकती है ,यदि वह उसे अपने ऊपर हावी होने देता है तो लकिन यदि उपभोक्ता को इस धन का उपयोग समझ जाए तो वह इससे अच्छी उपयोग में ले सकता है । अत्यधिक माया होने के कारण व्यक्ति हमेशा भय तथा लालच से घिरा रहता है और वह इस माया अर्थात धन का सदुपयोग नहीं कर पता है।

''कबीर सो धन सचिए, जो आगे कुॅ होई ।

सीस चढ़ाए पोटली, के लात ना देखे कोइ ।।

कबीर दास जी इस दोहे के माध्यम से व्यक्त करते हैं कि मनुष्य को अधिक धन का संचय नहीं करना चाहिए । मनुष्य को धन का संचय सिर्फ उतना ही करना चाहिए , जिससे कि वह आने वाले भविष्य में समस्याओं से निपट सके। कबीर दास जी के अनुसार मनुष्य को पुण्य रूपी धन को संग्रहित करना चाहिए क्योंकि अंत समय में पुण्य रूपी धन ही काम आता है । जबकि माया रूपी धन का संचय वर्तमान व भविष्य की आवश्यकताओं के अनुसार ही करना चाहिए क्योंकि अत्यधिक धन असीमित आवश्यकताओं तथा असीमित उपभोग को जन्म देता है, जिस कारण मांग बढ़ती है तथा उत्पादन कम होता है।

कबीर माया जिनि मिलै, सौ बरियां दे बॉहि।

नारद से मुनियर गिले, किसौ भरौसौ ताहि।।

कबीर दास जी कहते हैं कि धन अर्थात माया कितना भी बुलाय उसके पास नहीं जाना चाहिए क्योंकि अत्यधिक धन की लालसा स मनुष्य का तिरस्कार ही होता है, जिस प्रकार नारद जैसे मुनियों को भी धन्य नहीं छोड़ा, इस प्रकार धन पर अत्यधिक धन पर विश्वास किया जाना जोखिम पूर्ण होगा।

कबीर दास के आर्थिक विचारों के प्रमुख आयाम निम्न प्रकार से है।–

1. श्रम

भक्ति कालीन अधिकतर संत श्रम कार्यों से संबंधित थे, जैसे कबीर दास जी स्वयं जुलाहे थे और वह श्रम को बड़ा सम्मान देते थे । साथ ही आत्मनिर्भरता हेतु श्रम को महत्व भी प्रदान करते थे । कबीर दास जी की दृष्टि में ''श्रम से अर्जित धन ही श्रेष्ठ'' है यह उनकी एक दोहे से ज्ञात होता है :–

''करी मेहनत जो खाई, सोई सच्चा धन''

इस दोहे के माध्यम से कबीर दास जी यह स्पष्ट करने का प्रयत्न करते हैं की श्रम अधिक महत्वपूर्ण है तथा श्रम से प्राप्त किया गया धन का उपभोग ही सच्चा धन है।आर्थिक रूप से क्लासिकल विचारधारा भी श्रम के महत्व को स्पष्ट करती है जो कि कहीं ना कहीं भारतीय संत परंपरा से उदगमित है इसी प्रकार गुरु नानक जी ने भी ''कीरत करो'' वक्तव्य प्रस्तुत किया था जो कि यह बताता है कि व्यक्ति को ईमानदारी से श्रम करना चाहिए और श्रम से धन अर्जन करना चाहिए।

2. आवश्यकता आधारित विचार

कबीर दास जी कभी भी धन के विरोधी नहों है लेकिन वह अत्यधिक संग्रह के विरोधी आवश्यक रहे जो उनके निम्न दोहे से प्रतीत होती है

''साइ इतना दीजिए ,जामें कुटुम समाये

में भी भूखा ना रहूं साधु न भूखा जाए''

कबीर दास जी की विचारधारा है यह संतुलित उपभोग और सीमित आवश्यकताओं को दर्शाती ह, आधुनिक विचारधारा के अर्थशास्त्री भी सीमित संतुलित उपभोग तथा आवश्यकताओं को सीमित करने की ओर अपने विचारधाराओं को व्यक्त करते है । कबीर दास जी के विचारों के माध्यम से हम यह कह सकते हैं कि कबीर दास जी ने सीमित उपभोग तथा सामाजिक उत्तरदायित्व को भावनाओं को समझते हुए अपने विचारों का प्रतिपादन किया जो आज के समय में निश्चित रूप से महत्वपूर्ण विचार है।

3. धन संचय व आर्थिक समानता

भक्तिकालीन जितने भी संत हुए हैं उन्होंने माना है कि अधिक धन संचय से नैतिक पतन होता है तथा आर्थिक विषमता पैदा होती है। भक्ति काल में रविदास जी का अपना एक विशेष दर्जा रहा है। रविदास जी ने ऐसे समाज की कल्पना की है जहां पर आर्थिक विषमता नगण्य है।

''ऐसा चाहूं राज में,जहां मिले सबन को अन्न''

उपर्युक्त दोहे के माध्यम से रविदास जी ऐसे समाज की कल्पना करते है जहां पर आर्थिक समानता हो।

4. धन का लोक कल्याणकारी उपयोग

कबीर दास, नानक , तुलसीदास, आदि धन के कल्याणकारी उपयोग पर बल देते हैं, जिस प्रकार 1930 के समय में अर्थशास्त्र में संतुलित विचारधारा को प्रोत्साहित किया । इस प्रकार भक्तिकालीन संतों ने 14 वीं शताब्दी में ही धन के कल्याणकारी वे संतुलित विचारधारा को प्रस्तुत कर चुके थे, जो कि यह सिद्ध करता है कि कहीं ना कहीं वर्तमान की आवश्यकता तथा विचारधारा पूर्व की विचारधाराओं पर निर्भर है।

सतत उपभोग भक्ति कालीन कवि सतत उपभोग की विचारधारा को अत्यधिक महत्व देते थे । भक्ति कालीन कवियों ने सादगी, संतोष, संयम तथा सीमित उपभोग को सुखी जीवन का आधार माना । सतत उपभोग आर्थिक जीवन को परिलक्षित करता है उपभोग उत्पादन का सृजन करता है तथा उपभोग मांग को बढ़ाती है। इस प्रकार भक्तिकालीन कवियों ने श्रम, सीमित उपभोग, धन संचय ,आर्थिक समानता,सामाजिक कल्याण जैस विभिन्न विषयों पर अपने विचार समय अनुसार प्रस्तुत किए।

कबीर दास जी तथा अर्थशास्त्रियों के विचारों का तुलनात्मक अध्ययनः—

कबीर दास जी तथा अर्थशास्त्रियों के विचारों में कुछ मतभेद भी हो सकते है जैसे की एडम स्मिथ कहते हैं की धन संचय करना , संपत्ति बढ़ाना आवश्यक है वहीं कबीर दास जी के विचार अनुसार आवश्यकता अनुसार धन ही एकत्र करना चाहिए। जहां एक और एडम स्मिथ श्रम विभाजन से उत्पादकता बढ़ाने पर जोर देते है वहीं कबीर दास जो श्रम की गरिमा तथा आत्मनिर्भरता पर अपने विचार व्यक्त करते हैं । एक और एडम स्मिथ आर्थिक समृद्धि की बात करते हैं वही कबीर दास जी सामाजिक तथा नैतिक समृद्धि पर जोर देते है। इसी प्रकार जोन मेनार्ड किन्स कहते हैं की मांग बढ़ाने के लिए उपभोग आवश्यक है जबकि कबीर दास जी सीमित और आवश्यकता अनुसार उपभोग पर बल देते हैं । किन्स धन को निवेश का माध्यम मानते हैं और कबीर दास धन को जीवन निर्वाह का साधन मानते हैं । कबीर दास जी के विचारों की तुलना हम अमृत्य सेन के विचारों से भी कर सकते है एक और अमृत्य सेन मानव क्षमता पर बल देते हैं जबकि कबीर दास जी मानव कल्याण और समानता पर बोल देते है । एक अन्य तुलनात्मक अध्ययन में अमृत्य सेन विकास में नैतिकता को महत्व देते हैं जबकि कबीर दास नैतिकता को केंद्र में रखते हैं । तुलनात्मक अध्ययन के अतिरिक्त कबीर दास जी तथा अर्थशास्त्रियों के विचारों में कुछ समानताएं भी हैं जैसे कि मानव कल्याण को महत्व देना ,धन के असमान वितरण को खत्म करना, संसाधनों का पूर्ण उपयोग करना इत्यादि समानताएं भी है।

निष्कर्शः—

कबीर दास जीके दोहों का आर्थिक आकलन करने में शोध के उद्देश्य निहित थे जैसे की क्या कबीर दास के विचार आधुनिक सिद्धांतों से मेल खाते हैं ,क्या कबीर दास जी के विचार सामाजिक और आर्थिक समानता को बढ़ावा देते हैं तथा क्या कबीर दास जी के विचार सतत विकास के पर्याय हैं । शोध कार्य का आकलन करते समय श्रम, आर्थिक समानता, सीमित उपभोग,धन संचय,सामाजिक समानता जैसे पक्षों पर विचार किया गया और यह पाया गया की कबीर जी के विचार आधंनिक सिद्वांतों से मेल खाते है। अधिक आधुनिक सिद्धांतों में किन्स का ''आय की गति चोटी का सिद्धांत'' तथा ''मुद्रा बुरी स्वामिनो परंतु अच्छी सेवक है '' का मूल कबीर दास के विचारों से प्रतित होता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं की कबीर दास के विचार आधुनिक सिद्धांतों से मेल खाते हैं या यूं कहें की आधुनिक सिद्धांत कबीर दास जी के विचारों से मेल खाते है।

शोध अध्ययनका दूसरा उद्देश्य क्या कबीर दास जी के विचार सामाजिक समानता और आर्थिक समानता को बढ़ावा देते है इसकी उत्तर मे अध्ययन पश्चात् यह प्रतीत होता है की कबीर दास जी के विचार सामाजिक समानता और आर्थिक समानता को बढ़ावा देते हैं क्योंकि उनके श्रम आधारित विचार तथा धन संचय के विचार यह स्पष्ट करते हैं । कबीर जी स्वंय जुलाहे परीवार से थे तथा श्रम आधारित व्यवसाय पर निर्भर थे। कबीर दास जी के विचार सतत् विकास की ओर अग्रसर करते है।

स्रोतः:—

1. कबीर ग्रन्थावली
2. कबीर बीजक
3. कबीर मन्शुर